... पारमिता की ये कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से एक नए संसार की सृष्टि करती हैं। इनका शिल्पहीन शिल्प, अनायास कहीं कुछ छूता हुआ, छेड़ता हुआ चला जाता है। उसका पारदर्शी यथार्थ, व्यक्ति का अपना यथार्थ बनकर कहीं कथा में सिमट आता है—तब काग़ज़ में लिखी कहानी उसे अपनी कहानी लगती है—अपने सामने घटित होती हुई जैसी।

ये कहानियाँ मात्र चौंकाती नहीं, बल्कि कहीं किंचित् चिंतन के लिए भी विवश करती हैं। सरल, सहज लिखना स्वयं में कहीं बहुत दुष्कर काम है। परंतु इन कहानियों को पढ़कर 'सहज' के महत्त्व को आसानी से आँका जा सकता है।

पारमिता की ये कहानियाँ, आज की कहानियाँ हैं। जो देखा, जो अनुभव किया, उन्हीं जीवंत अनुभूतियों के अंश कई रूपों, रंगों में प्रतिबिंबित होते हुए।

ये सहज कहानियाँ पहली बार पुस्तक रूप में सँवरकर हिंदी में आ रही हैं। हिंदी-पाठकों को एक नई दुनिया से साक्षात्कार का अवसर मिलेगा।

Himanshu Josi
Noted Hindi Prose Writer & Critic

हिमांशु जोशी का जन्म 1935 में हुआ। उपन्यास, कहानी-संग्रह, कविता-संग्रह की लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से पुरस्कृत हुए हैं। संपर्क : 7/सी-2 हिंदुस्तान टाइम्स अपार्टमेंट्स, मयूर विहार फ़ेज-1, दिल्ली-110091; मोबाइल : 9899311932

Published in Sama kalini bharatiya sahitya

... ऐसे में पारमिता को लेखिका के रूप में भी देखती हूँ और एक नइ पीढ़ी के बहुत ही अच्छे रिप्रेजेंटेटिव राइटर के रूप में मैंने उनको देखा है हमेशा से , जब से उन्होंने लिखना शुरु किया ।

Boldness वहाँ मुझे दिखता है नइ पीढ़ी के लेखकों में, कुछ लेखिकाओं में और पारमिता में तो बहुत ही स्पष्ट रूप में जब वे उन मूल्यबोधों को और नैतिकताओं को भी प्रश्न किया है । समाज के भीतर अनुष्ठानिक रूप से जो झूठ चले आ रहे हैं जो झूठ अभी भी चलते हैं, उनको सामने लाने का, उनपे प्रश्नवाची लगाने का जिन्होंने हिम्मत किया है उनको मैं असली रूप से bold कहूँगी । यह पारमिता की बहुत-सी कहानियों में है।

एक चीज और इनके नारी-विमर्शता में मुझे बहुत अच्छी लगी, बल्कि इसमें भी बहुत ही इन्हें मैं bold कहूँगी कि मातृत्व के विषय को इन्होंने बड़े ही सहजता और बड़े अधिकार के साथ, वर्चस्व के साथ बार-बार प्रस्तुत किया है जिस विषय की चर्चा नारी-विमर्श की तथाकथित लेखिकाएँ बेहद हिचकिचाती हैं ।

Excerpts...

Yashodhara Mishra
Eminent Novelist & Story writer

दूर के पहाड़ : मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति...

उर्मिला शिरीष

युवा लेखिका (मूल उड़िया लेखिका) पारमिता शतपथी की कहानियां समकालीन समाज के उस बदलाव को प्रस्तुत करती हैं जिसमें परम्परा और आधुनिक चिंतन की दृष्टि सम्पन्नता है, अपने परिवेश को रेखांकित करने की कलात्मकता है और जिन कहानियों को अपने पात्रों की वैयक्तिक चेतना, सोच, स्वतंत्रता तथा स्वनिर्णय के लिए याद किया जा सकता है। इन कहानियों में बदलते हुए मानवीय संबंधों और उन संबंधों को लेकर जो संवेदना तथा दृष्टिबोध रचा गया है वह गहरे तक आन्दोलित करता है। पारमिता किसी विचार विशेष को लेकर कहानी नहीं लिखती है बल्कि कहानी को जीवन से उठाती है, सहज ढंग से लिखती है, मौलिकता के साथ जीवन की बहुआयामी तस्वीरों को सहज भाषा शिल्प में अभिव्यक्ति देती हैं। पन्द्रह कहानियों वाला यह संग्रह विषय वैविध्य की दृष्टि से भी ध्यान खींचता है। पहली कहानी 'बाजार' में मछली बाजार का सशक्त चित्रण है, जहां संजय मछली खरीदने जाता है। मोलभाव चलता है... मंहगाई की बात होती है, तो घर में मीरा की घर गृहस्थी की मांगें होती हैं वहीं परिवार में दूर बैठे पिता को लड़की के विवाह के लिए पैसे की जरूरत है दफ्तर में नवधन जैसा युवक है जो काम करवाने के लिए चापलूसी करता है पुराना परिचय... निकालता है लेकिन सरिता मोहन्ती जैसी युवती भी है जिसे देखकर संजय प्रफुल्लित हो उठता है। नौकरी की तलाश में आई सरिता.... संजय को प्रभावित कर लेती है। संजय सरिता का साथ पाकर परितृप्त हो जाता है तो मीरा. ... पैसा पाकर। सबकी अपनी प्राथमिकताएं हैं, चिंताएं हैं, जिम्मेदारियां हैं... जिन्हें अपने-अपने स्तर पर पति-पत्नी पूरा करते हैं और खुश रहते हैं। इस कहानी में स्थानीय बाजार तथा परिवेश का खूबसूरत चित्रण किया गया है। संबंधों का निर्वाह कैसे किया जाता है यह भी इस कहानी में मनोवैज्ञानिक ढंग से बताया गया है।

'दूर के पहाड़' संग्रह की शीर्षक कहानी है। यह एक कामकाजी.... सफल समृद्ध स्त्री की कहानी है.... जो अपने अविवाहित जीवन में अपने अकेलेपन को जी रही होती है। उसका जीवन पहाड़ की तरह है। दूर से पहाड़ हरा-भरा..... सुंदर दिखाई देता है लेकिन बहुत अकेला..... और सूना भी। आत्मनिर्भर होकर भी भावनात्मक स्तर पर नितान्त एकाकी अपने आसपास के परिवेश के भीतर एक सीमारेखा खींचकर उसी में कैद हो जाती है। हालांकि इसमें दोनों महिलाओं की बातचीत..... उनकी अभिरुचियों..... तथा जीवनशैली को भी बताया गया है। विवाह को लेकर उनके मन में जो भ्रम रहता है उसकी आत्मस्वीकृति भी ईमानदारी के साथ चित्रित की गयी है।

आजकल विवाह संस्था के स्थायित्व को लेकर तमाम सवाल उठाये जा रहे हैं.... इसके पीछे संभवतः असफल दाम्पत्य जीवन को देखकर..... उसी मनोविज्ञान के तहत सोचना.... और निर्णय न ले पाना.. कारण हो सकता है..।

उड़िया की यह कथाकार अपने विषय वैविध्य और कहानी की कलात्मकता के कारण लेखन परम्परा को समृद्ध बनायेगी तथा समकालीन कथा के विकास में अपनी लेखनी का जादू बनाये रखेगी ऐसी संभावना इस संग्रह की कहानियों में है। राजेन्द्र कुमार मिश्र का अनुवाद बहुत अच्छा बन पड़ा है। कहानियों की संवेदना..... मूल भाव तथा भाषा-शैली-शिल्पगत संरचना, अनुवाद में सुंदर ढंग से प्रस्तुत हुई है। पारमिता का यह प्रथम संग्रह (हिन्दी में) उनकी रचनात्मक क्षमताओं और चिंतन दृष्टि को प्रस्तुत करने तथा पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ने में सफल रहा है।

Published in "Akshara"

...मुझे पारमिता की कहानियाँ पढ़ते हुए जो अहसास हुआ बहुत पुख्ता । मुझे लगा कि मैंने अब तक ओड़िया महिला कथाकारों को जितना पढ़ा है, कहीं पारमिता ने उस लीक पर प्रहार किया है । पारमिता अतीत से रचना को बाहर निकालकर लाती है । पारमिता अतीत और वर्तमान के द्वंद्व को भी बाहर निकालकर लाती है । पारमिता आज के परिदृश्य में पैठ करती है और पैठ करके कहीं उसके भीतर जिस तरह से एक जो अंतर-संसार है उसको निकालकर लाती है ।

मुझे लगता है कि कहानी का जो एक पारंपरिक चेहरा है, उसको तोड़ती हैं पारमिता की ये कहानियाँ, और हिंदी में जब ये आती हैं तो एक सबसे बड़ी बात मुझे ये लगी इन कहानियों को पढ़ते हुए, पारमिता को मैंने पहले भी पढ़ा है, और अब जब मैं उन्हें दुबारा पढ़ रही थी, तो मुझे लगा कि अनुवाद नाम की चीज उससे गायब है कहीं न कहीं । ये कहानियाँ लगता है कि हिंदी में ही रची गई हैं, हिंदी के मुहावरों से लैश, हिंदी के स्पंदन से कहीं स्पंदित, कहीं बहुत भीतर पाठक के अंतर मन को झकझोरती हुई और उसे उस विडंबना से साक्षात् करवाने के लिए बाध्य करती हैं कि देखो आँखें खोलो, यह संसार क्या वही संसार है जो तुम्हारे माता-पिता से तुम्हें विरासत में मिला है ।

मैं पारमिता को बहुत-बहुत बधाई देती हूँ । मैं इतनी आशान्वित हुई हूँ उसकी रचनाओं से गुजरते हुए कि मैं बता नहीं सकती । मुझे बहुत उम्मीद हो रही है पारमिता से और पारमिता जितना ओड़िया की है, फकीरमोहन सेनापति की जो परंपरा है, वो परंपरा अपने वक्त की मिट्टी के साथ रच-बस करके उसकी रूढ़ियों और उसकी चौखटों के बाहर के बड़े-बड़े तालों को तोड़ा है उस परंपरा ने । आज परमिता अनदिखे जो ताले बाज़ारवाद के, उपभोक्तावाद के हमारे भीतर हमारे मानस पर पड़ रहे हैं उसको तोड़ती है ।

Excerpts from the speech by Chitra Mudgal, Eminent & story writer, on lunching of the book Door ke Pahad